



Himani Soni

01 Dec 2023

12:25 PM

Balaghat

Model: Web-MyKundli

Order No: 119117501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 01/12/2023
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 12:25:00 घंटे
इष्ट _____: 14:45:23 घटी
स्थान _____: Balaghat
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:48:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:16:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:08:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 12:16:04 घंटे
वेलान्तर _____: 00:11:09 घंटे
साम्पातिक काल _____: 16:55:35 घंटे
सूर्योदय _____: 06:30:50 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:24:55 घंटे
दिनमान _____: 10:54:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 14:36:51 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 14:48:21 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: पुनर्वसु - 4
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: शुक्ल
करण _____: बालव
गण _____: देव
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: ही-हिना
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1945	मार्गशीर्ष	10
पंजाबी	संवत : 2080	मार्गशीर्ष	16
बंगाली	सन् : 1430	मार्गशीर्ष	14
तमिल	संवत : 2080	कार्तिगई	15
केरल	कोल्लम : 1199	वृश्चिकम	15
नेपाली	संवत : 2080	मार्गशीर्ष	15
चैत्रादि	संवत : 2080	मार्गशीर्ष	कृष्ण 4
कार्तिकादि	संवत : 2080	कार्तिक	कृष्ण 4

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 4
तिथि समाप्ति काल _____ : 15:31:42
जन्म तिथि _____ : 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 16:40:20 घंटे
जन्म योग _____ : पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग _____ : शुक्ल
योग समाप्ति काल _____ : 20:02:43 घंटे
जन्म योग _____ : शुक्ल
सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
करण समाप्ति काल _____ : 15:31:42 घंटे
जन्म करण _____ : बालव
भयात _____ : 53:29:37
भभोग _____ : 64:07:57
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 2 वर्ष 7 मा 16 दि

घात चक्र

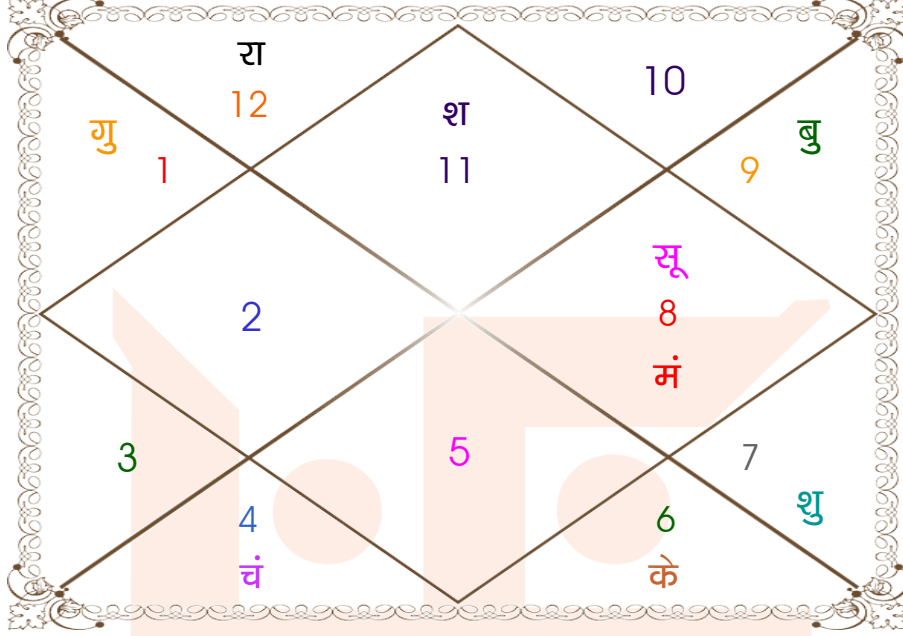
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

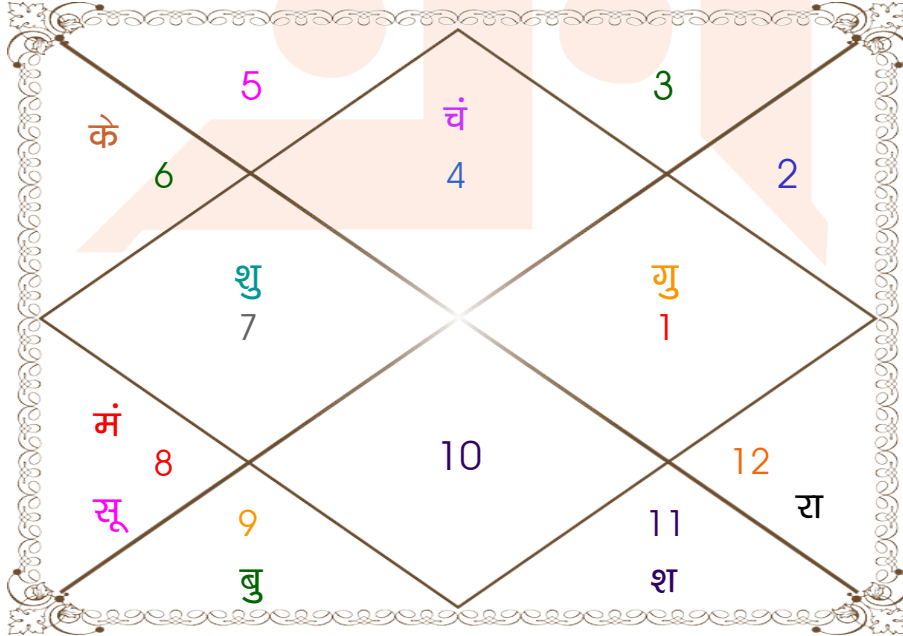
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा	गु		
श ल			चं
बु	मं सू	शु	के

लग्न कुंडली

	गु	रा	श ल
चं			
के	शु	सू मं	बु

विंशोत्तरी
गुरु 2वर्ष 7मा 16दि
गुरु

01/12/2023

19/07/2130

गुरु	18/07/2026
शनि	18/07/2045
बुध	18/07/2062
केतु	18/07/2069
शुक्र	18/07/2089
सूर्य	18/07/2095
चन्द्र	19/07/2105
मंगल	19/07/2112
राहु	19/07/2130

योगिनी
पिंगला 0वर्ष 3मा 28दि
धान्या

30/03/2024

31/03/2027

धान्या	29/06/2024
भ्रामरी	29/10/2024
भद्रिका	30/03/2025
उल्का	29/09/2025
सिद्धा	30/04/2026
संकटा	29/12/2026
मंगला	29/01/2027
पिंगला	31/03/2027

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

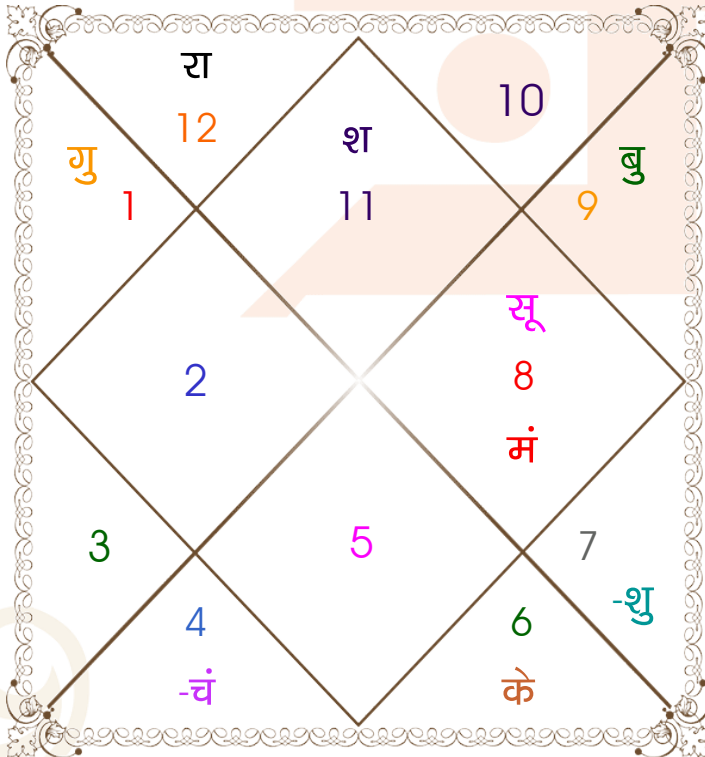
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	14:48:21	461:17:00	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	---
सूर्य			वृश्चि	14:36:51	01:00:47	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	01:08:34	12:22:35	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	मंगल	स्वराशि
मंगल		अ	वृश्चि	10:42:43	00:43:02	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	सूर्य	स्वराशि
बुध			धनु	05:26:00	01:11:53	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	सम राशि
गुरु		व	मेष	12:53:17	00:05:46	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	मित्र राशि
शुक्र			तुला	01:42:56	01:10:01	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण
शनि			कुंभ	06:57:10	00:02:45	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	मूलत्रिकोण
राहु		व	मीन	29:41:05	00:07:16	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	सम राशि
केतु		व	कन्या	29:41:05	00:07:16	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
हर्ष		व	मेष	26:09:35	00:02:20	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	---
नेप		व	मीन	00:42:25	00:00:11	पूर्वाभाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	---
प्लूटो			मक	04:19:18	00:01:23	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
दशम भाव			वृश्चि	20:58:31	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	शुक्र	--

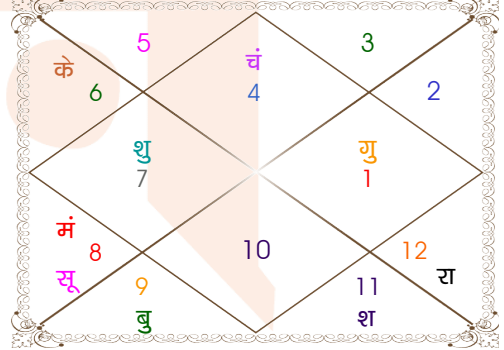
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:11:21

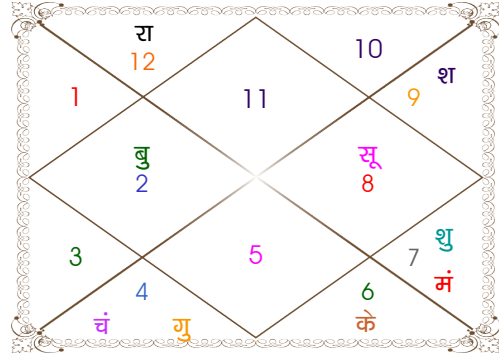
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

9827998836, 9425878602

astrosandeep90@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 00:50:03	कुम्भ 14:48:21
2	मीन 00:50:03	मीन 16:51:44
3	मेष 02:53:26	मेष 18:55:07
4	वृष 04:56:49	वृष 20:58:31
5	मिथुन 04:56:49	मिथुन 18:55:07
6	कर्क 02:53:26	कर्क 16:51:44
7	सिंह 00:50:03	सिंह 14:48:21
8	कन्या 00:50:03	कन्या 16:51:44
9	तुला 02:53:26	तुला 18:55:07
10	वृश्चिक 04:56:49	वृश्चिक 20:58:31
11	धनु 04:56:49	धनु 18:55:07
12	मकर 02:53:26	मकर 16:51:44

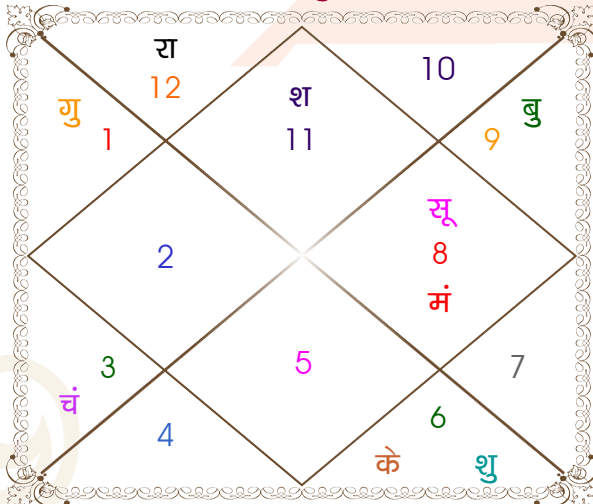
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ 14:48:21	
2	मीन 22:49:54	
3	मेष 24:33:54	
4	वृष 20:58:31	
5	मिथुन 15:34:38	
6	कर्क 12:08:25	
7	सिंह 14:48:21	
8	कन्या 22:49:54	
9	तुला 24:33:54	
10	वृश्चिक 20:58:31	
11	धनु 15:34:38	
12	मकर 12:08:25	

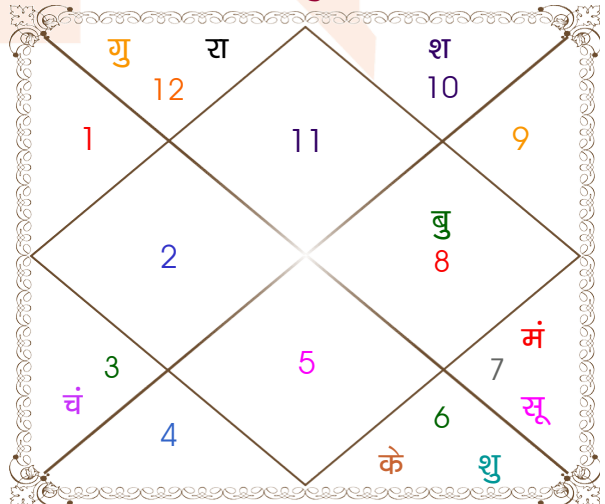
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 2 वर्ष 7 मास 16 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
01/12/2023	18/07/2026	18/07/2045	18/07/2062	18/07/2069
18/07/2026	18/07/2045	18/07/2062	18/07/2069	18/07/2089
00/00/0000	शनि 21/07/2029	बुध 14/12/2047	केतु 14/12/2062	शुक्र 16/11/2072
00/00/0000	बुध 30/03/2032	केतु 11/12/2048	शुक्र 13/02/2064	सूर्य 17/11/2073
00/00/0000	केतु 09/05/2033	शुक्र 12/10/2051	सूर्य 20/06/2064	चंद्र 18/07/2075
00/00/0000	शुक्र 08/07/2036	सूर्य 17/08/2052	चंद्र 19/01/2065	मंगल 16/09/2076
00/00/0000	सूर्य 20/06/2037	चंद्र 16/01/2054	मंगल 17/06/2065	राहु 17/09/2079
00/00/0000	चंद्र 20/01/2039	मंगल 14/01/2055	राहु 06/07/2066	गुरु 18/05/2082
01/12/2023	मंगल 29/02/2040	राहु 02/08/2057	गुरु 12/06/2067	शनि 18/07/2085
मंगल 22/02/2024	राहु 05/01/2043	गुरु 08/11/2059	शनि 21/07/2068	बुध 18/05/2088
राहु 18/07/2026	गुरु 18/07/2045	शनि 18/07/2062	बुध 18/07/2069	केतु 18/07/2089
सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
18/07/2089	18/07/2095	19/07/2105	19/07/2112	19/07/2130
18/07/2095	19/07/2105	19/07/2112	19/07/2130	00/00/0000
सूर्य 04/11/2089	चंद्र 18/05/2096	मंगल 15/12/2105	राहु 01/04/2115	गुरु 05/09/2132
चंद्र 06/05/2090	मंगल 17/12/2096	राहु 02/01/2107	गुरु 24/08/2117	शनि 20/03/2135
मंगल 11/09/2090	राहु 18/06/2098	गुरु 09/12/2107	शनि 30/06/2120	बुध 24/06/2137
राहु 06/08/2091	गुरु 18/10/2099	शनि 17/01/2109	बुध 18/01/2123	केतु 31/05/2138
गुरु 24/05/2092	शनि 19/05/2101	बुध 14/01/2110	केतु 05/02/2124	शुक्र 29/01/2141
शनि 06/05/2093	बुध 18/10/2102	केतु 13/06/2110	शुक्र 05/02/2127	सूर्य 18/11/2141
बुध 12/03/2094	केतु 19/05/2103	शुक्र 13/08/2111	सूर्य 31/12/2127	चंद्र 20/03/2143
केतु 18/07/2094	शुक्र 17/01/2105	सूर्य 19/12/2111	चंद्र 01/07/2129	मंगल 02/12/2143
शुक्र 18/07/2095	सूर्य 19/07/2105	चंद्र 19/07/2112	मंगल 19/07/2130	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 2 वर्ष 7 मा 26 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - राहु 22/02/2024 18/07/2026	शनि - शनि 18/07/2026 21/07/2029	शनि - बुध 21/07/2029 30/03/2032	शनि - केतु 30/03/2032 09/05/2033	शनि - शुक्र 09/05/2033 08/07/2036
राहु 03/07/2024 गुरु 28/10/2024 शनि 16/03/2025 बुध 18/07/2025 केतु 07/09/2025 शुक्र 31/01/2026 सूर्य 16/03/2026 चंद्र 28/05/2026 मंगल 18/07/2026	शनि 08/01/2027 बुध 13/06/2027 केतु 16/08/2027 शुक्र 15/02/2028 सूर्य 10/04/2028 चंद्र 10/07/2028 मंगल 13/09/2028 राहु 24/02/2029 गुरु 21/07/2029	बुध 07/12/2029 केतु 03/02/2030 शुक्र 16/07/2030 सूर्य 04/09/2030 चंद्र 24/11/2030 मंगल 21/01/2031 राहु 17/06/2031 गुरु 26/10/2031 शनि 30/03/2032	केतु 23/04/2032 शुक्र 29/06/2032 सूर्य 19/07/2032 चंद्र 22/08/2032 मंगल 15/09/2032 राहु 14/11/2032 गुरु 07/01/2033 शनि 12/03/2033 बुध 09/05/2033	शुक्र 18/11/2033 सूर्य 14/01/2034 चंद्र 21/04/2034 मंगल 27/06/2034 राहु 18/12/2034 गुरु 21/05/2035 शनि 20/11/2035 बुध 02/05/2036 केतु 08/07/2036
शनि - सूर्य 08/07/2036 20/06/2037	शनि - चंद्र 20/06/2037 20/01/2039	शनि - मंगल 20/01/2039 29/02/2040	शनि - राहु 29/02/2040 05/01/2043	शनि - गुरु 05/01/2043 18/07/2045
सूर्य 26/07/2036 चंद्र 24/08/2036 मंगल 13/09/2036 राहु 04/11/2036 गुरु 20/12/2036 शनि 13/02/2037 बुध 03/04/2037 केतु 24/04/2037 शुक्र 20/06/2037	चंद्र 08/08/2037 मंगल 10/09/2037 राहु 06/12/2037 गुरु 21/02/2038 शनि 24/05/2038 बुध 14/08/2038 केतु 16/09/2038 शुक्र 22/12/2038 सूर्य 20/01/2039	मंगल 12/02/2039 राहु 14/04/2039 गुरु 07/06/2039 शनि 10/08/2039 बुध 07/10/2039 केतु 30/10/2039 शुक्र 06/01/2040 सूर्य 26/01/2040 चंद्र 29/02/2040	राहु 03/08/2040 गुरु 20/12/2040 शनि 02/06/2041 बुध 28/10/2041 केतु 28/12/2041 शुक्र 19/06/2042 सूर्य 10/08/2042 चंद्र 05/11/2042 मंगल 05/01/2043	गुरु 08/05/2043 शनि 01/10/2043 बुध 10/02/2044 केतु 03/04/2044 शुक्र 05/09/2044 सूर्य 21/10/2044 चंद्र 06/01/2045 मंगल 01/03/2045 राहु 18/07/2045
बुध - बुध 18/07/2045 14/12/2047	बुध - केतु 14/12/2047 11/12/2048	बुध - शुक्र 11/12/2048 12/10/2051	बुध - सूर्य 12/10/2051 17/08/2052	बुध - चंद्र 17/08/2052 16/01/2054
बुध 19/11/2045 केतु 10/01/2046 शुक्र 05/06/2046 सूर्य 19/07/2046 चंद्र 01/10/2046 मंगल 21/11/2046 राहु 02/04/2047 गुरु 28/07/2047 शनि 14/12/2047	केतु 05/01/2048 शुक्र 05/03/2048 सूर्य 23/03/2048 चंद्र 22/04/2048 मंगल 13/05/2048 राहु 07/07/2048 गुरु 24/08/2048 शनि 20/10/2048 बुध 11/12/2048	शुक्र 01/06/2049 सूर्य 23/07/2049 चंद्र 17/10/2049 मंगल 17/12/2049 राहु 21/05/2050 गुरु 06/10/2050 शनि 19/03/2051 बुध 12/08/2051 केतु 12/10/2051	सूर्य 27/10/2051 चंद्र 22/11/2051 मंगल 10/12/2051 राहु 26/01/2052 गुरु 07/03/2052 शनि 25/04/2052 बुध 08/06/2052 केतु 26/06/2052 शुक्र 17/08/2052	चंद्र 29/09/2052 मंगल 29/10/2052 राहु 15/01/2053 गुरु 25/03/2053 शनि 15/06/2053 बुध 27/08/2053 केतु 26/09/2053 शुक्र 22/12/2053 सूर्य 16/01/2054

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 2
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

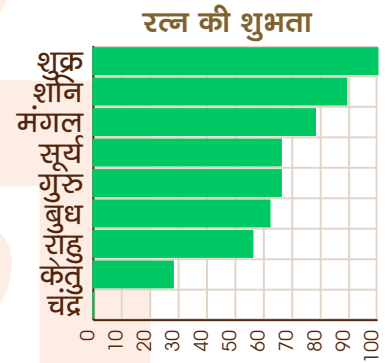
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	भाग्योदय, सुख
नीलम	शनि	89%	स्वास्थ्य, कम खर्च
मृंगा	मंगल	78%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	66%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
पुखराज	गुरु	66%	पराक्रम, धनार्जन, धन
पन्ना	बुध	62%	धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	56%	धन, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	28%	दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	0%	शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मृंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	18/07/2026	72%	0%	84%	50%	78%	88%	89%	56%	28%
शनि	18/07/2045	53%	0%	65%	69%	66%	100%	100%	62%	3%
बुध	18/07/2062	72%	0%	78%	75%	66%	100%	89%	56%	28%
केतु	18/07/2069	53%	0%	84%	62%	66%	100%	77%	38%	52%
शुक्र	18/07/2089	53%	0%	78%	69%	66%	100%	96%	62%	41%
सूर्य	18/07/2095	78%	0%	84%	62%	72%	88%	77%	38%	3%
चंद्र	19/07/2105	72%	9%	78%	69%	66%	100%	89%	38%	3%
मंगल	19/07/2112	72%	0%	90%	50%	72%	100%	89%	38%	41%
राहु	19/07/2130	53%	0%	65%	62%	66%	100%	96%	69%	3%

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/12/2023-29/03/2025	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

स्वास्थ्य
सन्तति
शत्रु से कष्ट
दाम्पत्य कलह
भाग्योदय

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकमी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासनिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पितृ या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सख्दार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उखभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- गुरु
(01/12/2023 - 18/07/2026)**

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की महादशा 01/12/2023 को आरम्भ और 18/07/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, दृढ़ता, छोटे भाई-बहन, छोटी यात्रा, वाहन, बॉण्ड, गले, कन्धे, हँसली तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभग्रह है। आपकी जन्मकुण्डली में तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि सातवें, नवें और ग्यारहवें भाव पर है और यह उक्त भावों के कार्यों को प्रभावित कर रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धि दायक तथा स्वास्थ्यप्रद होगी।

स्वास्थ्य :

साहस, पराक्रम तथा शक्ति के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी गुरु के कारण आपको शक्ति मिलेगी और आप हर तरह की कठिन परीक्षा का सामना साहसपूर्वक करेंगे। आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

धन-सम्पत्ति :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ग्यारहवें भाव (नवें और सातवें भाव के अतिरिक्त) पर है। ग्यारहवाँ भाव लाभ का भाव है इसलिए आपको धन-सम्पत्ति में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। इस दशा के दौरान आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

तृतीय भाव में स्थित ज्ञान और शिक्षा के कारक गुरु की (सातवें भाव के अतिरिक्त) ग्यारहवें तथा नवें भावों पर दृष्टि है। फलतः आपकी प्रवृत्ति साहित्यिक क्षेत्र की ओर होगी। आप लेखक या उपन्यासकार और एक साहित्यिक व्यक्ति हो सकते हैं। आप हर क्षेत्र में प्रगति करेंगे और भाई-बहनों तथा अन्य सहयोगियों, संबंधियों के सहयोग के फलस्वरूप आपको पर्याप्त लाभ मिलेगा।

पारिवारिक जीवन :

तृतीय भाव में स्थित गुरु की (नवें तथा ग्यारहवें भावों के अतिरिक्त) सातवें भाव पर दृष्टि है। सातवाँ भाव जीवनसाथी का भाव है। इसलिए आपके जीवनसाथी बहुत सहयोगी होंगे। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण तथा अनुकूल होगा। आपके बच्चे तथा छोटे भाई-बहन आपके आज्ञाकारी होंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

महादशा :- शनि
(18/07/2026 - 18/07/2045)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 18/07/2026 को आरम्भ और 18/07/2045 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन-शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन-संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ-सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमें स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।

अंतर्दशा :- शनि - शनि
(18/07/2026 - 21/07/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/07/2026 को प्रारंभ होकर 18/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 18/07/2026 को प्रारंभ होकर 21/07/2029 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति में गिरावट आ सकती है। वातरोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अधिकारीगण अप्रसन्न रह सकते हैं। आलस्य की भावना अधिक हो सकती है; जिम्मेदारियों से बचने की कोशिश कर सकते हैं। कार्यों में प्रगति धीमी रहेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें:

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।

अंतर्दशा :- शनि - बुध
(21/07/2029 - 30/03/2032)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 18/07/2026 को प्रारंभ होकर 18/07/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 21/07/2029 को प्रारंभ होकर 30/03/2032 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में अधीनस्थ कर्मचारी आपके वफ़ादार होंगे जिससे आपके उद्योग-व्यापार में खूब प्रगति होगी। विज्ञान में दक्षता के लिए प्रसिद्ध हो सकते हैं। मित्रवर्ग में आपकी साख एक विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में होगी। ज्ञानार्जन और अध्ययन का मन बना सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com